International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान में वेदांत दर्शन की प्रासंगिकता

डॉ.लक्ष्मीकान्त नेमा

सहायक प्राध्यापक [समाजशास्त्र]

शासकीय महा.सिलवानी – रायसेन [म.प्र.]

सारांश –

विश्व की ज्ञान परम्परा में भारतीय दर्शन को सबसे प्राचीन और समृद्ध दार्शनिक परम्परा माना जाता है। प्राचीन काल से ही भारत में मनुष्य के जीवन, जगत और परम सत्य के बारे में गहराई से चिंतन किया जाता रहा है। इसी दार्शनिक परंपरा में वेदांत दर्शन का विशेष और महत्वपूर्ण स्थान है। वेदांत दर्शन मुख्य रूप से उपनिषदों में बताए गए आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित है। इसमें यह बताया गया है कि ब्रह्म (परम सत्य) और आत्मा मूल रूप से एक ही हैं, और मनुष्य सही ज्ञान प्राप्त करके इस सत्य को समझ सकता है। वेदांत दर्शन केवल दार्शनिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के जीवन को सही दिशा देने का भी कार्य करता है। यह मनुष्य को आत्मचिंतन, संयम, सत्य, करुणा और नैतिकता जैसे मूल्यों को अपनाने की प्रेरणा देता है। इसके माध्यम से मनुष्य अपने जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझने का प्रयास करता है और आंतरिक शांति प्राप्त कर सकता है। वर्तमान समय में समाज कई प्रकार की समस्याओं से घिरा हुआ है। आज भौतिकवाद का प्रभाव बहुत अधिक बढ़ गया है, जिसके कारण लोग बाहरी सुख-सुविधाओं के पीछे अधिक भाग रहे हैं और आंतरिक शांति से दूर होते जा रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप मानसिक तनाव, असंतोष, प्रतिस्पर्धा, नैतिक मूल्यों का पतन, पर्यावरण संकट तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसी परिस्थितियों में वेदांत दर्शन के सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक दिखते हैं। यह दर्शन मानव को समन्वय, सहअस्तित्व और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना विकसित करने की प्रेरणा देता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य वेदांत दर्शन की मूल अवधारणाओं का अध्ययन करना तथा यह समझना है कि आधुनिक समाज में इसकी प्रासंगिकता किस प्रकार बनी हुई है। साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया जाएगा कि वेदांत दर्शन के सिद्धांत आज के समाज को मानसिक शांति, नैतिक दिशा और संतुलित जीवन की ओर कैसे मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

➢ **मुख्य शब्द:** वेदांत, प्रस्थानत्रयी. ब्रह्म, आत्मा, अद्वैत, आध्यात्मिकता, नैतिकता।

➢ प्रस्तावना -

भारतीय दर्शन का मूल उद्देश्य जीवन और जगत के अंतिम सत्य की खोज करना है। यह केवल सैद्धांतिक चिंतन नहीं बल्कि जीवन को समझने और उसे श्रेष्ठ बनाने की प्रक्रिया है। भारतीय दर्शन की विभिन्न धाराओं में वेदांत दर्शन अत्यंत महत्वपूर्ण है। "वेदांत" शब्द का अर्थ है – वेदों का अंतिम सार या अंतिम ज्ञान, जो मुख्यतः उपनिषदों में व्यक्त हुआ है। वेदांत दर्शन मानव को यह समझाने का प्रयास करता है कि वास्तविक सत्य ब्रह्म है और आत्मा उसी का स्वरूप है । इस दर्शन के अनुसार मनुष्य का वास्तविक लक्ष्य आत्मज्ञान प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करना है। वर्तमान समाज में वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के बावजूद मनुष्य अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है, जैसे— नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक तनाव ,अवसाद , अत्यधिक भौतिकता , सामाजिक असमानता ,पर्यावरण संकट इन परिस्थितियों में वेदांत दर्शन का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है क्योंकि यह मनुष्य को आंतरिक शांति, नैतिकता और आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान करता है। भारतीय वाङ्मय में दर्शन का अर्थ केवल बौद्धिक विलास नहीं बल्कि 'दृष्टि' है—सत्य को देखने का मार्ग है , वेदांत, जिसे उत्तर-मीमांसा भी कहा जाता है, यह वह ज्ञान-पुंज है जो जीव, जगत और ब्रह्म के अंतर्संबंधों की व्याख्या करता है। आदि शंकराचार्य का अद्वैत, रामानुजाचार्य का विशिष्टाद्वैत और मध्वाचार्य का द्वैत—इन सभी धाराओं ने मानवीय चेतना को उच्चतम स्तर पर परिभाषित किया है। वेदांत का मूल मंत्र है- "एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति" (सत्य एक है, विद्वान उसे अलग-अलग नामों से जानते अथवा पुकारते हैं) । भारतीय दर्शन की यह उदारता ही इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकार्य बनाती है । वेदांत दर्शन में बादरायण –ब्रह्मसूत्र , उपनिषद एवं गीता महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं जिन्हें 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है, यह वे तीन आधार स्तंभ ज्ञान के स्रोत ग्रन्थ हैं जिन पर संपूर्ण वेदांत की नींव टिकी हुई है। ब्रह्मसूत्र अंधविश्वास के विरुद्ध तार्किक और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देता है। उपनिषद व्यक्ति को 'स्व' की खोज की प्रेरणा देते हैं और गीता आधुनिक जीवन के संघर्षों का व्यवहारिक समाधान देती है।

➢ शोध के उद्देश्य -

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं —

1. वेदांत दर्शन की मूल अवधारणाओं का अध्ययन करना।
2. आधुनिक समाज की प्रमुख समस्याओं का विश्लेषण करना, जैसे— नैतिक मूल्यों का ह्रास, मानसिक तनाव, अत्यधिक भौतिकता , सामाजिक असमानता ,पर्यावरण संकट का विश्लेषण करना और यह जानना कि वेदांत दर्शन वर्तमान समाज की समस्याओं के समाधान में किस प्रकार सहायक हो सकता है।

➢ शोध परिकल्पना -

इस अध्ययन की मुख्य परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं—

1. वेदांत दर्शन के सिद्धांत वर्तमान समाज की नैतिक और मानसिक,पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सहायक हैं।
2. वेदांत दर्शन सामाजिक समानता और मानवता की भावना को विकसित करता है।
3. वेदांत दर्शन आधुनिक भौतिकवादी जीवन शैली में संतुलन स्थापित करने में सहायक है।

➢ शोध पद्धति –

यह शोध मुख्य रूप से 'वर्णनात्मक' और 'विश्लेषणात्मक' है। इसमें प्राचीन दार्शनिक सिद्धांतों का वर्तमान सामाजिक, मानसिक और पर्यावरणीय संदर्भों में विश्लेषण किया गया है इस शोध के लिए 'द्वितीयक डेटा' का उपयोग किया गया है। जानकारी के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं। अध्ययन के लिए निम्न स्रोतों का उपयोग किया गया है—

- भरतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित ग्रंथ
- भारतीय दर्शन की पुस्तकों का अध्ययन
- शोध लेख और अकादमिक साहित्य

इस शोध में विषय का अध्ययन दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से किया गया है।

➢ साहित्य समीक्षा -

शोध अध्ययन के लिए भारतीय दर्शन से सम्बंधित पुस्तकों,ग्रंथो का अध्ययन किया गया है अध्ययन से स्पष्ट होता है की वेदांत दर्शन को भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति की आत्मा माना है। वेदांत दर्शन मानव जीवन को केवल भौतिक दृष्टि से नहीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से समझने का प्रयास करता है। वेदांत दर्शन का अद्वैत सिद्धांत मानव को सार्वभौमिक दृष्टि प्रदान करता है। इसके अनुसार सभी प्राणियों में एक ही आत्मा का वास है, जिससे समानता और भाईचारे की भावना विकसित होती है। अनेक लेख,पुस्तकों के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है की वेदांत दर्शन स्रोत ग्रन्थ उपनिषद ,गीता में मानव जीवन से जुडी अनेक समस्याओं

के समाधान मौजूद है जिन्हें व्यबहार में लाकर न केवल मानव अपितु विश्ब शांति की राह को आसन किया जा सकता है। आधुनिक शोधकर्ताओं ने यह भी बताया है कि वेदांत दर्शन मानसिक शांति और आत्मिक संतुलन प्राप्त करने में अत्यंत सहायक है।

➢ वर्तमान समाज में वेदांत दर्शन की प्रासंगिकता का विश्लेषण -

मानव समाज का विकास ही उसके अन्दर उपजे जगत,प्रकृति आदि के संम्बंध में क्यों,कैसे ,कब ,जैसे प्रश्नों के उत्तरों के कारण हुआ इस विकास यात्रा में एक ओर रचनात्मकता के कार्य मानव ने किये तो वहीं दूसरी ओर प्रकृति का अंधाधुन्ध दोहन कर भौतिकतावादी मार्ग पर बढ़कर अनेक समस्याओं को जन्म दिया आज मानव समाज अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझ रहा है। भौतिक प्रगति और तकनीकी विकास के बावजूद मनुष्य के जीवन में तनाव, असंतोष, प्रतिस्पर्धा, नैतिक मूल्यों का पतन, पर्यावरण संकट तथा सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। ऐसे समय में वेदांत दर्शन की शिक्षा मानव जीवन को संतुलन, शांति और सही दिशा प्रदान करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकती हैं। इस अध्ययन में वर्तमान समाज की प्रमुख समस्याओं का समाधान वेदांत दर्शन किस प्रकार से करता है इसका विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

➢ वेदान्त दर्शन और तनाव प्रबंधन -

वर्तमान समाज में भविष्य की अनिश्चिता, अत्यधिक कार्य का भार,अनियमित जीवन शैली के कारण आज का मनुष्य अत्यधिक तनाव से घिरा हुआ है। वेदांत दर्शन में आत्मचिंतन और ध्यान के माध्यम से तनाव प्रबंधन के अनेक उपाय मौजूद है जिनको अपना कर हम अपना तनाव कम कर मानसिक शांति प्राप्त कर सकते है , उपनिषदों और भगवद्गीता में ऐसे श्लोक मिलते हैं जो मन को शांत करने का मार्ग बताते हैं। जैसे – तनाव अक्सर भविष्य की चिंता या काम के बोझ से आता है। इसका समाधान भगवद गीता के इस प्रसिद्ध श्लोक में है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ४७

व्यक्ति का अधिकार केवल कर्म (कार्य करने) पर है, उसके फल (परिणाम) पर नहीं, यह श्लोक हमें सिखाता है कि कर्तव्य पर ध्यान दो, परिणाम पर नहीं, तभी मन शांत रहेगा और कार्य भी श्रेष्ठ होगा। यह श्लोक कार्य के परिणाम के प्रति हमारे तनाव को कम कर मानशिक शांति देता है।

➢ **वेदान्त दर्शन में मानव जीवन की दिशा-**

व्यक्ति जीवन में कभी –कभी दो राहे पर आकर रुक जाता है जहाँ उसे निर्णय लेने में परेशानी होती है ऐसी स्थिति में बृहदारण्यक उपनिषद् का यह श्लोक मानव का मार्गदर्शन करता है ।

असतो मा सद्मय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय॥

बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय १, खंड ३, मंत्र २८

हे परमात्मा ! हमें असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर, और मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो।

➢ **वेदांत दर्शन में - प्रकृति के साथ संतुलन और सहअस्तित्व-**

वेदांत दर्शन में प्रकृति के साथ संतुलन, सहअस्तित्व व प्रकृति के संरक्षण के सम्बन्ध में बहुत गहराई से विचार किया गया है। आधुनिक युग में भोतिकवादी विचार और एक दुसरे से आगे निकल जाने की होड़ में समूचे विश्व को अवांछित जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणाम झेलने पड़ रहे हैं जिस सतत विकास की बात आज पूरा विश्व कर रहा है। वह सहज रूप में वेदांत दर्शन हजारों वर्ष पूर्व से करता अ रहा है, ईशावास्य उपनिषद का यह मन्त्र समूचे विश्व को दिशा प्रदान करता है।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥

ईशोपनिषद, मंत्र १

ईशावास्योपनिषद् का यह पहला मंत्र है जो केवल एक प्रार्थना नहीं है, बल्कि मानव जीवन जीने की एवं प्रकति के संतुलन की कार्ययोजना है। इस जगत में जो कुछ भी जड़-चेतन या परिवर्तनशील है उसे ईश्वर में व्याप्त माना गया है। अतः मनुष्य को चाहिए कि वह संसार की वस्तुओं का उपभोग तो करे, लेकिन त्यागपूर्वक भाव से करे। हमें यह समझना चाहिए कि हम इन वस्तुओं के मालिक नहीं बल्कि केवल रक्षक हैं। जब सब कुछ परमात्मा का ही है तो किसी दूसरे के धन या वैभव का लालच करना व्यर्थ है। प्रकृति के साथ सहअस्तित्व तभी संभव है जब हम उसका उपयोग संयम और जिम्मेदारी के साथ करें न कि अंधाधुंध शोषण के रूप में।

➢ **वेदांत दर्शन और श्रेष्ठ मानवीय गुण –**

श्रीमद्भागवतगीता के इस श्लोक में देवीय जिसे हम श्रेष्ठ मानवीय गुण कह सकते हैं का उल्लेख हुआ है।

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥

श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १६, श्लोक २

- अहिंसा- मन, वाणी और शरीर से किसी भी प्राणी को कष्ट न देना।
- सत्यम्- यथार्थ और प्रिय बोलना, जैसा देखा या सुना हो वैसा ही कहना।
- अक्रोध- अपमान या प्रतिकूल परिस्थिति होने पर भी मन में क्रोध न आने देना।
- त्याग- कर्तापन के अभिमान का त्याग करना (यह मानना कि "मैं" करने वाला नहीं हूँ)।
- शान्ति- अन्तःकरण की चंचलता का अभाव, मन का शांत रहना।
- अपैशुनम्- किसी की पीठ पीछे बुराई न करना या चुगली न करना।
- दया भूतेषु- दुखी प्राणियों को देखकर उनके प्रति करुणा का भाव रखना।
- अलोलुप्त्वम्- इन्द्रियों के विषयों के सामने होने पर भी उनमें आसक्त न होना (लालच न करना)।
- मार्दवम्- स्वभाव में कोमलता और विनम्रता होना।
- ह्री- लोक मर्यादा या शास्त्र के विरुद्ध कार्य करने में लज्जा का अनुभव करना।

- अचापलम्- व्यर्थ की चेष्टाओं का अभाव, यानी मन और इंद्रियों में स्थिरता।

उपरोक्त श्लोक में मानव के अध्यात्मिक विकास, मानसिक शान्ति व उसके व्यक्तित्व विकास में ये गुण उसका तो कल्याण करते ही है साथ में समाज के लिए भी उपयोगी है। वेदांत दर्शन में श्रीमद्भागवतगीता का महत्व अत्यंत गहरा है, क्योंकि गीता को 'प्रस्थानत्रयी' का एक मुख्य स्तंभ माना जाता है। श्रीमद्भागवतगीता वेदांत दर्शन को व्यवहारिक और सरल रूप में प्रस्तुत करती है

➢ निष्कर्ष -

वेदांत दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है। इसकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन काल में थीं। आधुनिक समाज में बढ़ती भौतिकता, मानसिक तनाव और नैतिक संकट के समाधान के लिए वेदांत दर्शन एक प्रभावी मार्ग प्रस्तुत करता है। यदि वेदांत के सिद्धांतों को व्यवहार में अपनाया जाए तो व्यक्ति के जीवन में शांति और संतुलन स्थापित किया जा सकता है। साथ ही समाज में समानता, सहिष्णुता और नैतिकता का विकास संभव है। वेदांत दर्शन केवल भारतीय समाज का ही नहीं अपितु पूरे विश्व के लिए शांति और संतुलन का मार्ग प्रसस्त करता है। इसलिए यह कहा जा सकता है, कि वर्तमान समाज में वेदांत दर्शन की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण और उपयोगी है।

➢ सन्दर्भ सूची –

1. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय २, श्लोक ४७
2. बृहदारण्यक उपनिषद, अध्याय १, खंड ३, मंत्र २८
3. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय १६, श्लोक २
4. विवेकानंद, स्वामी. (2005). ज्ञान योग (पृ. 35–52). कोलकाता: अद्वैत आश्रम।
5. शर्मा, सी. (2000). ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ इंडियन फिलॉसफी (पृ. 210–230). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
6. हिरियन्ना, एम. (1993). आउटलाइन्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी (पृ. 150–165). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
7. डॉ.राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन भाग-1 २०२३ राजपाल एन्ड सन्ज ,दिल्ली।
8. प्रशांत आचार्य ,वेदांत २०२५।
9. सांकृत्यायन राहुल,दर्शन- दिग्दर्शन प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली।
10. गोयन्दका हरिकृष्ण दास,वेदांत-दर्शन [ब्रह्मसूत्र] गीता प्रेस गोरखपुर।
11. ठाकुर डॉ. प्रेरणा,महाजन दिनेश ,भारतीय ज्ञान परम्परा प्रबुद्ध भारत अनुराधा प्रकाशन नई दिल्ली।
12. गोयन्दका हरिकृष्ण दास,ईशादि नौ उपनिषद गीता प्रेस गोरखपुर।
13. चौहान उत्तम सिहं ,समाज विज्ञान का दार्शनिक आधार मध्य प्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
14. https://githa.koyil.org/index.php/16-2-hindi